बरकत बाबा
(Barkat Baba)

Dr. Waseem Siddiqi
डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8Th Road North
Ahmadi.61008
Kuwait

बूढ़े बरकत बाबा की खुर दिमाग़ी और चिड़चिड़े पन से पूरे मोहल्ले वाले वाक़िफ़ थे। शायद ही मोहल्ले में कोई ऐसा शख़्स हो जिससे उसने ठीक तरीक़े से बात की हो अब सब ही उससे बात करने से कतराते थे। और वह अपने घर में बिल्कुल तन्हा किसी मरखन्ने बैल की तरह फुन्कारता रहता था। बरकत बाबा का अपने घर ही के पास एक बड़े से एहाते में लकड़ी का कारख़ाना था जिसमें उसके कारीगर और मज़दूर बड़ी मुस्तएदी से काम करते नज़र आते थे क्योंकि वह जानते थे कि उनकी ज़रा सी सुस्ती बरकत बाबा को सख़्ती करने पर मजबूर कर सकती है वह सिर्फ़ ज़बान से सख़्ती करने का काइल था। उसकी डाँट फटकार किसी मार से कम न थी लेकिन उसके कारीगर मज़दूर तब भी उसे छोड़ कर जाना पसन्द नहीं करते थे। क्योंकि पैसे वग़ैरह में बरकत बाबा दूसरे लोगों से कहीं ज़्यादा सख़ी था हो सकता है इसके अलावा उसमें और कई दूसरी अच्छी सिफ़ात हों लेकिन बदएख़लाक़ी से बड़ा कोई ऐब तो होता नहीं इसलिये उसके इस ऐब ने उसकी तमाम सिफ़ात पर पानी फेर दिया था। बूढ़े बरकत में एक ऐब और था वह था उसके जाहिलाना अक़ाएद जिसको वह मज़हब का हिस्सा समझता था। अगर बदन के किसी हिस्से पर होली का रंग पड़ जाये तो क़यामत के रोज़ उतने हिस्से का गोश्त काटा जायेगा। अपने इस अक़ाएद पर वह सख़्ती से अमल करता था।

बरकत बाबा के मोहल्ले वाले भी क़ाफ़ी भले लोग थे। हिन्दु हो या मुसलमान या किसी भी मज़हब का आदमी हो किसी ने भी उनकी बदतहज़ीबी और चिड़चिड़े पन को संजीदगी से नहीं लिया और अगर कभी कोई उसके चिड़चिडे पन का शिकार भी हुआ तो अपने ग़ुस्से को मुस्कुराहट में टाल गया आज तक किसी ने उसकी बद एख़लाक़ी का जवाब बद एखलाक़ी से नहीं दिया हो सकता है इसकी वजह हमदर्दी रही हो। जो सब ही के दिल में बूढ़े बरकत के लिये थी हमदर्दियों की वजह बूढ़े बरकत का अकेला पन था यह नहीं था कि उसने शादी नहीं की थी या उसके बीवी बच्चे न हों।

उसने शादी की थी और उसके बच्चे भी थे लेकिन सन् 46 में मुल्क की तक़सीम के वक़्त जब फ़िरक़ावाराना फ़साद हुये तो उसकी बीवी और बच्चे भी उसी दरिन्दगी का शिकार हो गये थे। उसके बाद बरकत बाबा ने फिर शादी नहीं की और अपने को अपने लकड़ी के कारख़ाने में मशगूल कर लिया हो सकता है उसके चिड़चिडे पन की यही वहज रही हो बिल्ली को तो वह कभी चुमकार भी लेता था लेकिन इन्सानों से वह सीधे मुँह बात कर ले यह कभी नहीं हुआ उसे जैसे इन्सानों से नफ़रत हो।

उस चिड़चिड़े बरकत बाबा में इधर एक ज़बरदस्त इन्क़लाब आ गया था। उसकी वजह यह थी कि जिमी चार पाँच साल का एक नन्हा मुन्ना बच्चा था जो एक रोज़ बूढ़े बरकत को उसके एहाते के फाटक के पास छोटा सा क्रिकेट का बैट लिये नज़र आया। और वह इस लम्बे चौड़े एहाते को ऐसी ललचाई नज़रों से देख रहा था जैसे कि वह टाफ़ी को देखता हो। बूढ़ा बरकत जो बच्चों को हमेशा डाँट कर भगा देता था जिमी को देखता रह गया। शायद वह उसका मासूम भोला चेहरा था कि बरकत बाबा उसे डांट नहीं सका और किसी सोच मे पड़ गया। उसके चेहरे पर रंज व ग़म की परछाइयाँ आने जाने लगी थीं शायद वह माज़ी में खो गया था। फिर वह जिमी से बोला बेटे यहाँ खेलोगे। जिमी काफ़ी देर तक असबात में गर्दन हिलाता रहा फिर यह नहीं कि बूढ़े बरकत

ने जिमी को अपने एहाते में सिर्फ़ खेलने की इजाज़त दी हो बल्कि वह खुद भी जिमी के साथ खेल रहा था।

उस मोहल्ले में कोई पार्क या खेलने का मैदान नही था जहाँ कि बच्चे खेल सकें, चौड़ी सड़कें भी नहीं थीं कि वह उस पर खेल लें। सिर्फ़ पतली गलियाँ थीं खुली जगह थी तो वह बरकत बाबा का बड़ा सा एहाता था लेकिन बूढ़े बरकत से बड़े क्या छोटे भी घबराते थे किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि उनके एहाते में दाख़िल हो जाये जिमी शायद वाहिद इन्सान था जिसे उस एहाते में खेलने का शर्फ़ हासिल हुआ था। उसके बाद जिमी का रोज़ का मामूल हो गया था कभी वह अकेले कभी अपने दोस्तों के साथ शाम को खेलने आता था कभी हॉकी होती थी कभी क्रिकेट और बूढ़ा बरकत सारे ही खेल में बराबर से शरीक होता था। अब बुढ़ा बरकत रोज़ ही बड़ी बेचैनी से जिमी का इन्तिज़ार करता था लेकिन कभी ऐसा भी होता कि किसी रोज़ जिमी नहीं आता उस रोज़ वह अपने कारीगरों पर बहुत बिगड़ता था कि जिमी क्यों नहीं आया, किसी ने उसे डाँट तो नहीं दिया कुछ कह तो नहीं दिया, सब ही कारीगर मज़दूर सफ़ाई पेश करते कि भला जिमी भईया को कोई कुछ कह सकता है वह तो बहुत प्यारा इन्सान है। और दूसरे रोज़ जब जिमी आता तो दौड़ कर बूढ़े बरकत के गले से लग जाता जैसे वह भी उससे बहुत दिनों बाद मिला है। बूढ़ा बरकत उससे शिकायत करता कि वह कल खेलने क्यों नहीं आया तब जिमी ने उसे बताया कि उसकी मम्मी उसे लेकर आन्टी के घर चली गयी थी। बहर हाल जिमी और बूढ़े बरकत से दोस्ती का नतीजा यह निकला कि अब उसका चिड़चिड़ा पन किसी हद तक ख़त्म हो गया था। जैसे पहले वह अपने कारीगरों को डांटा करता था बात बात पर। अब उसके बर ख़िलाफ़ वह अपने कारीगरों और मज़दूरों से ठीक तरीक़े से बात करने के साथ–साथ कभी कभी उनसे हंसी मज़ाक़ भी कर लिया करता था। सब ही कारीगर जानते थे कि यह सब इन्क़लाब जिमी भईया की वजह से है इसलिये जिमी भईया भी अब कारीगरों और मज़दूरों का चहीता बन गया था। और कभी कभी तो ऐसा होता था कि जिमी के साथ खेल में बूढ़े बरकत के साथ साथ उसके मज़दूर और कारीगर भी शामिल हो जाते और बेचारे मज़दूर क्या खेलना जानें खूब गिरते थे। इस पर बूढ़ा बरकत और जिमी दोनों दिल खोल कर हंसते थे एक रोज़ जिमी का बैट टूट गया तो उसने खुद अपने हाथों से जिमी के लिये नया बैट बनाया उस रोज़ नया बैट पाकर जिमी बहुत खुश हुआ था और इज़हारे शुक्र के लिये दूसरे ही रोज़ अपने डैडी के साथ बरकत बाबा के एहाते में दाख़िल हुआ था उसके डैडी ने बरकत बाबा का शुक्रिया अदा किया था जिसकी वजह से जिमी का दिल इस मोहल्ले में लग गया था वरना शुरू में तो दो चार रोज़ जिमी ने उन्हें बहुत परेशान किया था। उसके डैडी नये नये ट्रान्सफ़र होकर इस शहर में आये थे और अपनी क़लील आमदनी के मद्देनज़र उन्होंने इस मोहल्ले में मकान लेना मुनासिब समझा था वरना कहीं और मकान लेना उन के बस के बाहर था उन्होंने बरकत बाबा को बताया कि जिमी हर वक़्त घर में बरकत बाबा की बातें किया करता है और अब की वह छुट्टियों में घर जाने के लिये तैयार नही है कि वहाँ उसे बरकत बाबा कहाँ मिलेंगे और यह सुनकर बूढ़ा बरकत खुशी से फूला नहीं समाया था।

बूढ़ा बरकत अपने एहाते में बैठा हुआ था होली का दिन था आज उसके कारीगरों की भी छुट्टी थी और यह देखकर उसे मिली जुली खुशी और हैरत का एहसास हुआ कि जिमी जो रोज़ शाम को खेलने आता था आज सुबह के वक़्त एहाते में दाख़िल हो रहा था। जिमी के हाथों में दो रंग से भरी बोतलें थीं बरकत बाबा होली है का नारा लगा कर उसने बोतल का रूख़ उनकी तरफ़ किया ही था बरकत बाबा एक दम खड़े हो गये। यह क्या जिमी कहीं मुसलमान बच्चे होली खेलते हैं होली तो हिन्दू खेलते हैं।

जिमी ने बरकत बाबा का सख़्त लहजा सुना था उसकी आँखें डबडबा गयीं। हिन्दु–मुसलमान तो उसके ज़्यादा नही समझ में आया था वह रोंहासी आवाज़ में बोला घर में तो मम्मी डैडी अंकल सभी लोग होली खेल रहे हैं। हमने कहा था हम जा रहे हैं पहले बरकत बाबा के साथ होली खलेंगे।

क्या नाम है तुम्हारे डैडी का बरकत बाबा ने बड़े तशवीश से पूछा उसके डैडी से उन्होंने इतनी बातें की

थीं लेकिन उनका नाम ही नहीं मालूम क्या था।

अनिल कुमार नन्हे जिमी ने उनका नाम ठहर–ठहर कर बता दिया। फिर वह रंग की बोतलें सीने से समेटे वापस जाने लगा उसकी आँखों से आंसू निकलने शुरू हो गये थे। बरकत बाबा की डाँट से नन्हे जिमी को सख़्त तक़लीफ़ पहुँची थी बुढ़ा बरकत जिमी को वापस जाते देख रहा था उसके चेहरे पर कुर्ब के आसार साफ़ नज़र आ रहे थे। जिमी अभी एहाते के फाटक तक पहुँचा था कि बूढ़ा बरकत जैसे तड़प कर चीख़ उठा।

रूक जा जिमी बेटे और फिर उसने दौड़ कर जिमी को पकड़ कर सीने से लिपटा लिया। जिमी बेटे कहाँ जा रहे हो होली नहीं खेलोगे मैं तो ऐसे ही कह रहा था और जिमी के हाथ से बोतल छीन कर होली है कह कर जिमी पर रंग डालने लगा। जिमी की उदासी एक दम ग़ायब हो गयी वह खुशी से उछलने लगा था उसने भी होली है कह कर बरकत बाबा को पूरा रंग डाला था।

शाम को बरकत बाबा अनिल कुमार के यहाँ बैठे होली की मिठाई खा रहे थे। नन्हा जिमी खुशी से फूला नहीं समा रहा था। बरकत बाबा आज पहली बार उसके घर आये थे। वह मिठाई उठा उठा कर बाबा के मुँह में डाल रहा था और उसकी मम्मी भी सारी के पल्लू से सर ढके बरकत बाबा को नमस्ते करने आयी थी। जीती रहो कह कर बरकत बाबा ने जिमी की मम्मी को ढेरों दुआएँ दीं और अनिल कुमार सोच रहे थे कि कितना अकेला है बेचारा–बूढ़ा बरकत बाबा

.....☆.....